www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

# प्रज्ञावतार, प्रज्ञायुग एवं प्रज्ञा परिजन

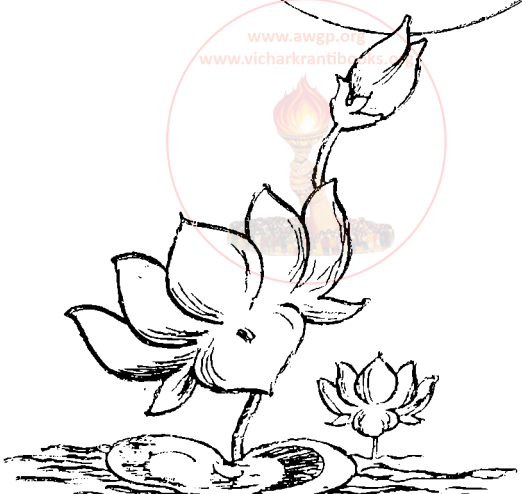

- श्रीराम शर्मा आचार्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

# प्रज्ञावतार, प्रज्ञा युग एवं प्रज्ञा परिजन

इन दिनों प्रगति और चमक-दमक का माहौल है पर उसकी पन्नी उघड़ते ही सड़न भरा विषघट प्रकट होता है। विज्ञान, शिक्षा और आर्थिक क्षेत्र की प्रगति सभी के सामने अपना चकाचौंध प्रस्तुत करती है। आशा की जानी चाहिए कि इस उपलब्धि के आधार पर मनुष्य को अधिक सुखी, समुन्नत, प्रगतिशील, सुसम्पन्न, सभ्य, सुसंस्कृत बनाने का अवसर मिलेगा। हुआ ठीक उलटा। मनुष्य के दृष्टिकोण, चरित्र और व्यवहार में निकृष्टता घुस पड़ने से संकीर्ण स्वार्थपरता और मत्स्य न्याय जैसी अतिक्रमणता का प्रवाह चल पड़ा। मानवी गरिमा के अनुरूप उत्कृष्ट आदर्शवादिता की उपेक्षा अवमानना हुई और विलास, संचय, पक्षपात तथा अहङ्कार का दौर मचल पड़ा। जिस लोभ, मोह और अहङ्कार को कभी शत्रु मानने, बचने, छोड़ने की शालीनता अपनाई जाती थी अब उसका अता-पता नहीं दीखता और हर व्यक्ति उन्हीं के लिए मरता दीखता है। परम्परा उलटी तो परिणति भी विघातक होनी चाहिए थी। हो भी रही है। शक्ति सम्पन्नता एक ओर— विनाश-विभीषिका दूसरी ओर। देख कर हैरानी तो अवश्य होती है पर यह समझने में भी देर नहीं लगती कि भ्रष्ट चिन्तन और दुष्ट आचरण अपनाने पर भौतिक समृद्धि से अपना ही गला कटता है, अपनी ही माचिस से आत्मदाह जैसा उपक्रम बनता है।

चौंधियाने वाली परत का पर्दा उघाड़ते ही प्रतीत होता है कि सब कुछ खोखला हो चला और घुना हुआ शहतीर किसी भी क्षण धराशायी होने की स्थिति में पहुँच गया। जन-जन का स्वास्थ्य खोखला होता जा रहा है। दुर्बलता और रुग्णता से हर काया जर्जर हो रही है। लोग आधी अधूरी आयुष्य पूरी होते-होते मौत के मुँह में घुस पड़ते हैं। मानसिक संतुलन के क्षेत्र में हर किसी को चिन्तित, भयभीत, आशंकित, खिन्न, विपन्न, असन्तुष्ट एवं उद्विग्न देखा जाता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



तनावग्रस्त मस्तिष्क न किसी को रात में चैन से सोने देता है और न दिन में संतोष उल्लास का अनुभव होने देता है। उद्विग्नता एक प्रकार की विक्षिप्तता है। जिससे मनुष्य मात्र अशुभ ही सोचता और अनुचित ही करता है। इस स्थिति की व्यापकता अपनी या पड़ोसियों की मनःस्थिति का पर्यवेक्षण करके ही भली प्रकार जाना जा सकता है।

लिप्सा, अपव्यय, दुर्व्यसन, आलस्य, प्रमाद, अहङ्कार ठाट-बाट और कुरीतियों के माहौल में हर किसी की आर्थिक स्थिति असंतोषजनक स्थिति में रह रही है। जो हस्तगत होता है, कम पड़ता है। फलतः लोग भ्रष्टाचार पर उतरते हैं। न करने योग्य भी बहुत कुछ करते हैं। अपराधी प्रवृत्ति स्वभाव, अभ्यास में सम्मिलित होती जा रही है। आक्रमण न सही छल या शोषण सही। येन केन प्रकारेण मनुष्य भ्रष्ट उपार्जन में संलग्न है। फिर भी अपव्यय की खाई सुरसा का मुख बनकर चौड़ी ही होती जाती है। पाटने से पटती ही नहीं।

परिवार में न सुख है न चैन, न स्नेह न सहयोग न सामंजस्य। हर सदस्य को अपनी पड़ी है। जेल खानों, सरायों, मुसाफिर खानों में भी भीड़ों एक साथ रहती है। भेड़ें भी एक बाड़े में बन्द रहती हैं। परिवारों की स्थिति प्रायः ऐसी ही है। लोग अन्धा धुन्धा प्रजनन पर उतारू और अपनों को विलासी बनाने के लिए, उनकी प्रसन्नता खरीदने के लिए श्रम, समय और धन पानी की तरह बहाते होली की तरह जलाते हुए देखे जाते हैं फिर भी उस क्षेत्र में दुष्प्रवृत्तियों का अनुपात ही बढ़ता जाता है। जिन घर घरौंदों में कभी स्वर्ग का दर्शन होता था उनमें आज विग्रह और असंतोष के अतिरिक्त और कहीं कुछ ढूँढ़े नहीं मिलता। सामाजिक प्रचलनों में एक दूसरे को ठगने, दबाने, मरोड़ने, निचोड़ने, गिराने की अगणित प्रथाएँ स्वाभाविक, आवश्यक जैसी बन गयी हैं। किसी का किसी पर विश्वास नहीं, किसी को किसी से कोई आशा नहीं। जो विश्वास करते और आशा बाँधते हैं वे कुछ ही दिन में कृतघ्नता, धोखेबाजी का शिकार हुआ अनुभव करते, अपने भोलेपन को कोसते देखे जाते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इस समय आर्थिक क्षेत्र का भ्रष्टाचार और नैतिक क्षेत्रका अनाचार समाज व्यवस्था की कमर तोड़ दे रहा है। सामाजिक कुरीतियोंके कारण होने वाली बर्बादी को समझते सभी हैं पर उन्हें छोड़ता कोई नहीं। उनके लाभदायक पक्ष को जब छोड़ा नहीं जायगा तो हानिकारक पक्ष से भी छुटकारा न मिलेगा। बेटी के विवाह में सुधारवादी और बेटे के विवाहमें परम्परावादी बनने वाले उस कुचक्र से छूटते ही नहीं। दुरंगी चाल, दोगली नीति अपनाने वाले कोल्हू के बैल की तरह ही पिटेंगे। समाज के हर क्षेत्र में अवांछनीयताओं का माहौल संव्याप्त है।

राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में सर्वग्राही जनसंख्या वृद्धि, जन-जन के स्वभाव में सम्मिलित अपराधी प्रवृत्ति, वर्ग-विद्वेष, संचय और विलास का कूटनीतिक कुचक्रों का कुछ ऐसा माहौल बन गया है कि विग्रह और आक्रमण के अतिरिक्त और किसी को कुछ सूझता ही नहीं। संकीर्णता की बढ़ोत्तरी, भाषा, क्षेत्र, सम्प्रदाय, वर्ग आदि की आड़ में कुछ को लाभ कमाने के लिए उत्तेजित करती और दूसरों को बर्बाद कर देने पर उतारू दीखती है। एकता समता, न्याय औचित्य और दूरगामी परिणामों की मानो किसी को कोई चिन्ता ही न रह गई हो। ऐसी स्थिति में समस्याओं का समाधान निकले तो कैसे? निकाले तो कौन निकाले? पुलिस, कानून, जेल, कचहरी की सीमा नगण्य है। वह हजारों अपराधियों में से एक दो को दण्डित कर पाती है। जो जेल जाते हैं वे सुधरने के स्थान पर अधिक ढीठ और प्रशिक्षित होकर लौटते हैं। गृहयुद्ध क्षेत्रीय युद्ध और विश्व युद्ध इसी माहौल की देन हैं।

पिछले दो महायुद्ध हो चुके हैं। तीसरे अणु आयुधों की खनखनाहट पग-पग पर विश्व विनाश की, महाप्रलय की चुनौती देती हैं। बढ़ती हुई दुष्प्रवृत्तियों ने अदृश्य वातावरण को विषाक्तता से भर दिया है और रुष्ट प्रकृति अ ये दिन दैवी प्रकोप रूप में अपना कोप बरसाती हैं।

वैज्ञानिक और आर्थिक प्रगतिके ने वायु प्रदूषण, खाद्य प्रदूषण रेडियो विकिरण की मात्रा इतनी बढ़ा दी है कि दम घुटने, पीढ़ियाँ अपङ्ग होने से लेकर ध्रुवों के पिघलने, समुद्र उमड़ने और हिमयुग आ धमकने तक की ऐसी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बिभीषिकाएँ सामने हैं जो इस ब्रह्माण्ड को, स्रष्टा की इस सर्वोत्तम कलाकृति धरती को चुटकी बजाते इस अन्तरिक्ष में धूलि बना कर उड़ा सकता है। सङ्कट काल्पनिक नहीं वास्तविक है। शुतुर्मुर्गों को तो अपनी मौत भी दिखाई नहीं पड़ती। पर जिन्हें वस्तु स्थिति के पर्यवेक्षण की सूक्ष्म दृष्टि प्राप्त है वे जानते हैं कि सङ्कट कितना गहरा है और किस प्रकार मानवी अस्तित्व जीवन मरण के झूले में इस समय झूल रहा है।

स्रष्टा ने इस भूलोक की व्यवस्था बनाये रहने और प्रगति के लिए प्रयत्नरत रहकर अपने वर्चस्व को प्रमाणित करने और मनुष्य से भी अधिक ऊँचे पर ऋषि-देवता अवतार के रूप में उपलब्ध करने की सुविधा प्रदान की है। युवराज का गौरव भी है और उत्तरदायित्व भी। यदि उसका निर्वाह ठीक तरह नहीं होता तो पदच्युत होने, अधिकार छिनने और राष्ट्रपति शासन लागू होने का भी प्रावधान है। इन दिनों यही होने जा रहा है। समय-समय यह होता भी रहा है। मनुष्य ने पतन, पराभव के गर्त में गिरना, असुरता का पृष्ठ पोषण करना और विनाश, विग्रह का सृजेता--आस्था सङ्कट जब-जब खड़ा किया है तब तब स्रष्टा ने विनाश का क्षण आने से पूर्व बागडोर थामी और जिम्मेदारी संभाली है। अधर्म का नाश और धर्म का सरक्षण, साधुता का परित्राण और दुष्कृत्यों के विनाश वाले अपने वचन का परिपालन किया है। मनुष्य गिरने या गिराने की उच्छृंखलता तो किसी सीमा तक कर सकते हैं पर द्रुत गति से विनाश चक्र घुमा देने के उपरान्त फिर उसे रोकना सामर्थ्य से बाहर हो जाता है। ऐसे विनाश प्रवाह को रोकने और उलटे को उलट कर सीधा कर देने की सामर्थ्य उसी में है जिसने इस सृष्टि को बनाने के साथ-साथ नियंत्रण में रखने का भी दायित्व संभाला है।

यह समय है जब स्रष्टा ने युग परिवर्तन के तूफानी प्रवाह का सूत्र सञ्चालन किया है। इससे पूर्व जब जैसी परिस्थितियाँ रही हैं तब उस स्तर के अवतार प्रकट हुए हैं। राम, कृष्ण, बुद्ध, गाँधी के समय में अवतारों के प्रवाह एवं कार्यक्रम सामयिक परिस्थितियों के अनुरूप बने हैं। इन दिनों की असुरता अनास्था सङ्कट के रूप में उत्कृष्टता के देवत्व की, मानवी गरिमा को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भस्मसात करने के लिए वृत्रासुर की तरह अट्टहास करता दीखता है। इसका निवारण महाप्रज्ञाके द्वाराही संभव है। इसलिए इन दिनों भगवान आद्यशक्ति गायत्री के रूप में, प्रज्ञा-अभियान एवं विचार क्रान्ति के रूप में प्रकट हो रहे हैं। इसी को प्रज्ञाअवतार कह सकते हैं। पौराणिक निष्कलंक भी यही है। निष्कलंक तो इस संसार में दूरदर्शी विवेक ही है। प्रज्ञा उसी को कहते हैं।

अवतार एक तूफानी प्रवाह होता है। उसके अदृश्य उभार को कार्यान्वित करने के लिए जागृत आत्माएँ आगे आती हैं। पर्वत शिखरों पर सर्वप्रथम सूर्य किरणें चमकती हैं। उषाकाल का आभास पाकर सर्वप्रथम कुक्कुट बाँग लगाता है। जागरूक देवात्माएँ ऐसे समय में भगवान की इच्छा को पूर्ण करने के लिए वाहन बन कर अपने पुरुषार्थ का परिचय देती हैं। हनुमान अङ्गद, अर्जुन, भीम से लेकर बुद्ध, गाँधी आदि की अपने समय में ऐसी ही भूमिका रही है। यह सब दृश्यमान कठपुतलियाँ थीं। उनके पीछे सूत्र सञ्चालन करने वाली अवतारी अदृश्य शक्ति ही अपनी भूमिका निभाती रही है। अग्रगामियों को श्रेय मिलना तो स्वाभाविक है। आँधी के साथ उड़ने वाले तिनके-पत्ते एवं रेत कण भी आकाश चूमते हैं। चक्रवात की प्रचंडता देखते ही बनती है। यह सब अवतारी शक्ति का साथ देने उसके प्रवाह में सम्मिलित होने का ही चमत्कार है।

अवांछनीयता को भट्टी में गलाया जा रहा है और पिघलाकर उसे उपयोगी स्वरूप में ढाला जा रहा है। युग संधि का प्रभात पर्व इसी महान परिवर्तन का ऐतिहासिक समय है। तमिस्रा का समापन और दिनमान का उदय इसी वेला में हो रहा है। सन् २००० तक का समय उसी उथल-पुथल से भरा पूरा समझा जाना चाहिए।

इन दिनों असाधारण परिवर्तन हो रहे है, होने जा रहे हैं। इस उथल पुथल के गर्भ से प्रज्ञा युग का जन्म होगा, उसके साथ उज्ज्वल भविष्य की समग्र सम्भावनाएँ जुड़ी हुई हैं। यों इससे पूर्व प्रसव वेदना भी कम नहीं सहनी पड़ेगी। सड़े फोड़े का मवाद निकाल बाहर करने के लिए कष्टकर आपरेशन भी तो होता है।

सन्निकट प्रज्ञा युग के अवतरण की परोक्ष प्रेरणा का वहन प्रत्यक्ष

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


रूप से प्रज्ञा परिजनों को करना होगा। उन्हीं को रीछ बानरों की, ग्वाल बालों की, बौद्ध परिव्राजकों की, सत्याग्रहियों की भूमिका निभानी होगी। मनुष्य में देवत्व के उदय और धरती पर स्वर्ग के अवतरण में उन्हीं को भागीरथी पुरुषार्थ की पुनरावृत्ति करनी होगी।

देखने में ऐसे झंझटों में पड़ना घाटे का सौदा प्रतीत होता है, पर वस्तुतः यह है असीम नफा कमाने का व्यवसाय। हनुमान ने कुछ खोया तो सही पर पाया उससे भी अधिक, विभीषण, सुग्रीव, यदि झंझट में न पड़ते, साथ न देते तो पुराने ढर्रे का गुजारा भर करते रह सकते थे जो ऐतिहासिक श्रेय मिला, प्रत्यक्ष और परोक्ष लाभ उठाया उससे वे वंचित ही रह गये होते केवट और शबरी को भी कुछ तो त्याग करना ही पड़ा। गिलहरी को भी कुछ तो व्यर्थ का सिर दर्द उठाना पड़ा पर तथ्यतः उनने खोया कम और पाया अधिक। गाँधी के सहयोगी विनोबा, नेहरू पटेल, राज गोपालाचार्य, राजेन्द्र बाबू, जाकिर हुसैन, आदि आरंभ में तो उन्हीं मूर्खों में गिने गये जो आदर्शों के लिए घाटा उठाते और काम हर्ज करते हैं। इन सब को कुटुम्बी,मित्रोंसम्बन्धियों ने रोका भी था और अपने मतलब रखनेकी चतुरताका परामर्श ही नही दबावभी दिया था। ऐसे आड़े समयों पर भी महामानवो की वरिष्टता परखी जाती है और वह खरी उतरती है तो न केवल उनके लिए वरन् उनके समूचे परिकर के लिए श्रेय प्रदान करती है। आड़े समयों में एक दुर्भाग्य भी है कि जो वरिष्ठ होते हुए भी असमञ्जस ग्रस्त रहते व अन्तः प्रेरणा को कुचलते रहते हैं उन्हें बाद में पछताना भी बहुत पड़ता है।

साहसी कहाँसे कहां चलेगये और सङ्कोची,भीरू आलसी यों रहते तो सदा ही घाटे में हैं पर ऐसे स्वर्णिम अवसर गंवा देने पर साथियों की तुलना में जब अपने दुर्भाग्य को देखते हैं तो दुःख और प्रायश्चित्य भी कम नहीं होता। जेल जाने वालों में से बहुतों को मिनिस्टर बना देखकर कितने ही सिर धुनते हैं और कहते हैं उन दिनों हमारी संङ्कीर्णता ही आड़े आई, अन्यथा हमें भी वैसे ही श्रेय पाने में कोई कठिनाई न पड़ती।

प्रज्ञा परिवार में ऐसे ही मूर्धन्यों का समुदाय है। उन्हें यही परामर्श दिया और अनुरोध आग्रह किया जाता है कि वे समय को चूकें नहीं। इस आपत्ति काल में युग धर्म निवाहें। छोटे-मोटे बहानों को आड़े न आने दें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अग्नि काण्ड भूकम्प, बाढ़. महामारी, दुर्भिक्ष, दुर्घटना जैसे आपत्तिकालीन अवसरों पर अपना काम हर्ज करके अन्तरात्मा की पुकार पर सहायता के लिए दौड़ना पड़ता है। इससे आर्थिक दृष्टि से घाटा भी पड़ता है। पर वह हानि बदले में जो आत्म संतोष, लोक सम्मान और पुण्य फल के रूप में दैवी अनुग्रह का लाभ प्रदान करती है उसे देखते हुए अन्ततः इसी निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ता है कि जो खोया था उससे अधिक पा लिया गया। बीज आरंभ में गलता है पर कुछ ही समय बाद वह अंकुरित, पल्लवित एवं फूलों से लदा हुआ विशाल वृक्ष बनता है तो स्पष्ट हो जाता है कि जो कदम कभी मूर्खता का लगता था अन्ततः चरम बुद्धिमत्ता का ही सिद्ध हुआ। परमार्थ, सो भी उपयुक्त समय पर उच्चस्तरीय प्रयोजनों के लिए बन पड़े तो समझना चाहिए कि सोना सुगंध जैसा सुयोग सौभाग्य बन गया।

ऐसी परिस्थितियों में समय न चूक कर बढ़-चढ़कर अपने समय धन श्रम की श्रद्धाँजलि अर्पित करने हेतु सबको आगे आना चाहिए। इसके लिये कुछ छोड़ना व तब कुछ अपनाना बन पड़ेगा। लोभ-मोह के बंधन त्यागने की बात कही जा चुकी है। यश-लिप्सा जैसी ऐवानाओं से मुक्ति पाकर औसत ब्राह्मणोचित निर्वाह का पुरातनकाल के पुरोहित जैसा जीवन जीने का भावी निर्धारण किया जा सके तो युग शिल्पी की भूमिका निभाने हर कोई आगे आ सकता है। अपने परिवार को सुसंस्कारी स्वावलम्बी बनाने की बात सोचते ही स्वयं अपने को भी बदलने की बात आती है। इस तनिक से पुरुषार्थ से वह सौभाग्य सहज ही मिल जाता है जो अर्जुन, हनुमान, या नेहरू पटेल को मिला। प्रज्ञावतारका प्रवाह तो सहज ही वह रहा है। दैवी चेतना के इस शुभ प्रयोजन में जो भी सहभागी बनेगा वह स्वयं भी धन्य होगा। प्रज्ञायुग लाने में उसकी भूमिका की भी गणना आने वाले समय में होगी। ऐसे अवसर गंवा देने वाले हमेशा पछताते व समय या भाग्य को दोष देते पाये जाते हैं। नव युग आना है, आएगा, प्रज्ञावतार का लीला संदोह रचा जाना है, रचा ही जाएगा, प्रज्ञा परिजन कैसे इसमें अपनी भूमिका नियोजित करें उसे विचारने का समय अभी ही है, बाद में आने वाला नहीं।

८०/१२४ प्र०युग निर्माण योजना, मु० युग निर्माण प्रेस, मथुरा। मूल्य ४० पैसे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org